आज की मुरली का सार -- Date: 08-05-2014

बाबा ने कहा, बाप आये हैं कांटों को फूल बनाने, सबसे बड़ा कांटा हैं देह-अभिमान, इससे ही सब विकार आते हैं, इसलिए देही-अभिमानी बनो.

देह-अभिमान ही सब विकारों की जड़ हैं. कैसे?

बाबा ने हमें समझाया हैं की स्वर्ग (सतयुग और त्रेता दोनों को मिला के स्वर्ग कहा जाता हैं) में दैवी-देवताये सभी आत्मा-अभिमानी होते हैं. जब मनुष्य स्वयं के सत्य स्वरूप आत्मा को जानता हैं और खुद को आत्मा समझ कर जीवन जीता हैं तो उसे ये भी पता हैं की में आत्मा अविनाशी हूं, ये शरीर अलग हैं, में आत्मा अलग हूं. जब उसे शरीर छोड़ ने का टाइम आता हैं तो उसे खुशी होती हैं की अब में नया शरीर लुंगी, तो खुशी-खुशी अपना पुराना शरीर भी त्याग देती हैं.

द्वापर से जब देह-अभिमान आता हैं तो मनुष्य स्वयं को शरीर समझ लेता हैं और शरीर को कैसे सुख मिले उसके रास्ते ढूंढता रहता हैं. देह-अभिमान से मनुष्य को सबसे पहले शरीर छूटने का भय लगता हैं. उसमें भी शास्त्रों ने मनुष्य के 84 जन्मो कि जगह, 84 लाख जन्म कर देने से, देह-अभिमानी मनुष्य को लगता हैं ये मनुष्य जीवन मुझे एक ही बार मिलता हैं और इसमें ही मुझे सारे संसार के सुख पा लेने हैं. इसे मनुष्य और ही ज्यादा विकारों में चला जाता हैं. **आत्मा की शक्तियां धीरे-धीरे क्षीण हो जाती हैं और कलियुग के अन्त में आत्मा पुरी पतित और दुखी बन जाती हैं.**

तब संगमयुग पर बाप आकर आत्माओं को फिर से स्वयं का, बाप का और इस सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान देते हैं और आत्मा को पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं. बाबा के साथ योग करने से, हम आत्माये शक्तिशाली बनती हैं, पावन (पवित्र) बनती हैं और आत्माओं में दैवी-गुणों की धारणा होती हैं. **शक्तिशाली आत्मा ही बाबा की बताई श्रीमत् को एक्युरेंट धारण कर सकती हैं और धारणा-युक्त पवित्र आत्मा ही बाबा के यज्ञ सेवा के लायक बनती हैं.** ऐसी लायक और समझदार आत्मा को ही बाप अपना वर्सा देते हैं और आत्मा 21 जन्मो के लिए स्वर्ग कि सच्ची सुख और शांति भोगती हैं. देह-अभिमान में आने से आत्मा अपवित्र नालायक बनती हैं जिसे बाप आकर लायक पवित्र लायक बनाते हैं और स्वर्ग का वर्सा देते हैं. **ऐसे ये सृष्टि चक्र फिरता ही रहता हैं.**

ॐ शांति.